Nonviolent Peaceforce

Swarajpeeth

९/११ कौन सी और क्यों : १९०६ या २००१
सत्याग्रह जन्मदिवस कार्यक्रम
सितम्बर ११, २००५, नई दिल्ली

<u>वक्तव्य</u>

प्रो. सय्यद हामिद

मेरे लिए यह बड़े सौभाग्य की बात है कि मुझे आज इस सभा में याद किया गया और मुझे शामिल होने का अवसर मिला। आप यह मत समझये कि मैं वह काम करता रहा हूँ जो आप कर रहें हैं और जिसकी प्रेरणा आपको मिली है। मैं कुछ लिखने - पढ़ने और लिखाने - पढाने के काम करता रहा हूँ। यह जो आन्दोलन आपने शुरू किया है, और जिसमें आपने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया है , इससे मैं सौ-फीसदी सहमत हूँ।

सोचिए कि मनुष्यों में मतभिन्नता तो होती है; एक व्यक्ति की दुसरे व्यक्ति से मतभिन्नता हो सकती है। कोई कौम हो या कोई देश हो, परस्पर मतभेद हो सकते हैं। लेकिन मतभेदों को हल करने का ढंग अगर हिंसात्मक हो तो मानव समाज आगे नहीं बढ़ सकता। उसका ढंग, उसका रास्ता, अहिंसा का रास्ता है और अपनी बात को विस्तार के साथ कहने और सत्य के आर्दशों का पालन करने में ही है। क्योंकि पहली और अन्तिम हक़ीक़त सच्चाई ही है।

'हक़' का शब्द हमारे यहाँ चलन में है, इसके कई अर्थ हैं। एक तो वही है जिसे आप 'राइट' कहते हैं, 'राइट' अर्थात हमारा अधिकार हम लेकर रहेगें। दुसरा इसका अर्थ है न्याय, इन्साफ, सत्य। आप विचार करें कि ब्रहम्मांड का यह तम्बू जो खड़ा है, यह जो कायनात खड़ा है वह न्याय पर टिका है। और जो न्याय से जहां हटा तो इस पंडाल में भूचाल आ जाएगा।

उपदेशों में कहा गया है कि समय, काल, को बुरा मत कहो। जमाने के दौर को बुरा न कहो, समय को बुरा न कहो क्योंकि स्वंय में वह अच्छा या बुरा नहीं होता। इसकी एक बडी मिसाल राजीवजी ने ढूंढ निकाली है। कहते हैं कि यह इस समय हमारे दिमाग में २००१ का वह बड़ा हादसा है जो ९/११ कहा जाता है, जिसके बाद से विश्व का संतुलन बिगड़ गया है। उन्होंने याद दिलाया है कि १९०६ में इसी तारीख को अफ्रीका में गांधीजी ने सत्याग्रह की नींव डाली। सत्याग्रह को वहां आजमाया और उसका सफल प्रयोग किया। गांधीजी फिर सत्याग्रह को भारत में लाए और उसी एक हथियार से विश्व की उस समय की सबसे शक्तिशाली साम्रज्यवादी ताकत को हराया और हिन्दुस्तान से बाहर निकाल दिया। सत्याग्रह का रास्ता

Swarajpeeth, G-89, Ground Floor, Preet Vihar, Vikas Marg, Delhi – 110 092
☎ +11-23235965 (R), +11-22444222 (O), swaraj@swarajpeeth.org

शांन्ति और सौहार्द का रास्ता है । अहिंसा का विचार तो पहले भी था लेकिन इसे जीवन में उतारा गांधीजी ने । रूसी उपन्यासकार टॉलस्टॅाय ने इसकी बहुत सुदंर चर्चा की है ।

मैं इस बात से बहुत प्रभावित हुआ कि इस सभा में और उन लोगों में, जिन्होंने शान्ति सैनिक का संकल्प लिया और जिनका सम्मान भरी सभा में हुआ, उनमें बड़ी संख्या मुसलमानों की है, क्योंकि अभी तक मुसलमान छोटी राजनिति में तो हैं लैकिन किसी सामाजिक सेवा के कार्यो से वे दूर रहे हैं । वे अब समाज सेवा में आगे आये हैं, और आप देखेंगे कि अब नक्शा बिल्कुल बदला हुआ नजर आएगा । मैं इसके लिए वोरा साहब और उनके साथियों को बधाई देता हूँ । ये ऐतिहासिक कदम है । उन्होंने यह बताया कि तुम्हारा धर्म यह सिखाता है, और तुम कब तक समाज सेवा से दूर रहोगे ।

जहां तक नये-नये झुकाओं और मनोवतियों के आने की बात है, जो कि हमारी संस्कति, हमारी तहजीब से भिन्न हैं और जिसके बारे में वोरा साहब ने चर्चा की है, यह आश्चर्य और चिन्ता की बात है कि हिन्दुस्तान की सभ्यता जो इतनी महान और प्राचीन है तो उसने इतनी आसानी से अपनी सभ्यता और अपनी परम्पराओं को क्यों छोड़ दिया है । अचानक पश्चिम से हमारा देश इतना प्रभावित क्यों हो गया यह मेरी समझ में नहीं आता । मैं अपने साथियों से कहता भी हूँ कि कोई नौ दौलतिया देश, अमेरिका जैसा देश, होता तो बात समझ में आने वाली थी, क्योंकि उनके यहाँ कोई बंदिश नहीं है कोई परम्परा नहीं है । लेकिन हिन्दुस्तान जैसे प्राचीन परम्पराओं वाले देश ने यह कैसे ग्रहण कर लिया यह समझ में नहीं आता, और इस पर कोई उगंली उठाने वाला भी नहीं है । इस तरफ ध्यान देने की आवश्यकता है । यह सत्याग्रह का कार्यक्रम जैसा कि आपने अपने साहित्य में लिखा है, वह एक बड़े फलक वाला कार्यक्रम हैं । सच्चाई के अन्तर्गत मनुष्य के सारे मानवीय गुण आ जाते हैं और इन गुणों का प्रचार करना हमारा कर्तव्य है । आपने यह भी बताया कि सत्याग्रह के आन्दोलन में उनके साथी और सहायक मुसलमान थे । उनके नाम भी आपने बताए हैं जो समाज सेवा में उनके साथ लग गये थे । गांधीजी तो हिन्दुस्तान चले आए लेकिन वे लोग वहीं रह गये । फिर समाज सेवा की वह भावना हमारे अन्दर बची नहीं रही ।

अब आप देखिए कि मौलाना अंजर शाह ने अभी जिसकी कुछ चर्चा की । किसी धार्मिक विद्वान के मुंह से कम्युनिस्ट पार्टी के पक्ष में कोई बात निकलना निश्चित तौर पर महत्व रखता है । मैंने भी यह अनुभव किया है इस दौर में मैं यह समझने लगा था, राजीव वोरा के मिलने से पहले, कि वे हिन्दुस्तान की नैतिक आवाज, देश का जमीर बन गये हैं । जहां किसी ने अन्याय किया; जहां कहीं गरीबों पर अत्याचार हुआ या उनके अधिकारों को छीनने की बात आई; या कहीं मजदूरों पर दमन हुआ या कहीं धार्मिक अतिवाद आया तो उसके विरोध में बोलने वाले केवल वामपंथी थे । उन्होंने प्रसंगवश यह बात कही लेकिन मैं कहीं यह महसूस करता हूँ कि उन्हें देश की नैतिक आवाज का गौरव प्राप्त हो गया ।

Swarajpeeth, G-89, Ground Floor, Preet Vihar, Vikas Marg, Delhi – 110 092
☎ +11-23235965 (R), +11-22444222 (O), swaraj@swarajpeeth.org

अब आप देखें कि अमेरिका ने ईराक में और अफगानिस्तान में क्या किया; ईराक में किस तरह से आया। आपने पढ़ा होगा कि पहले वहां की एक राजदूत ने ईराक को, सद्दाम हुस्सैन को शह दी और कुवैत पर हमला कराया। यह बात प्रमाणित है। इसके दस्तावेज़ी प्रमाण मौजूद है। इसके बाद अमेरिका ने दुनिया में यह बात फैलाई कि ईराक के पास ऐसे हथियार मौजूद हैं जो दुनिया को तबाह कर सकते हैं। इस बात का बार-बार खंड़न किया गया। अभी कल के अखबारों में था कि रक्षामंत्री पावेल ने कहा कि यह दाग मैं अपने साथ लेकर जाऊँगा कि मुझसे यह भूल हुई कि मैंने कहा ईराक में ऐसे हथियार मौजूद है जो दुनिया को मिटा देगें। पावेल आगे कहते है कि उन्होंने यह बात इस आधार पर कही कि अमेरिका की खुफिया ऐजेंन्सी ने उन्हें यह गलत सूचना दी थी। अब आप बताईये ... किसी की जान गई, आप की अदा ठहरी किसी ने एक गलत सूचना दे दी, आपने एक पूरे देश को मटिया मेट कर दिया। यह कहां का इंसाफ है, यह कौन - सा ढंग है।

अब एक ऐसा सवाल है जो मैं वोराजी से और उनके साथियों से करूंगा और इसका जवाब वे अभी न दें, फिर कभी दें। अमेरिका ने जब ईराक पर हमला करने का निर्णय लिया तो वहाँ की जनता इस निर्णय के विरोध में सड़कों पर निकल आई। जनता का रूख उनके खिलाफ था। वॉशिंगटन और लंदन जैसे बड़े-बड़े शहरों की जनता सड़कों पर हजारो की भीड़ में निकल आई। उन्होंने कहा कि यह बात गलत है यह नहीं होना चाहिए। लेकिन बावजूद इसके कि यह लोग शान्ति में विश्वास रखने वाले थे उनका आचरण भी सत्याग्रही का था, चाहे उनमें बलिदान की वह भावना न सही। सारे देशों ने, समस्त दुनिया ने कहा कि यह अनुचित क़दम है। लेकिन कोई उसे रोक नहीं सका। इसका क्या इलाज है ? यह मालूम होता है कि इस समय अमेरिका के जोर्ज बुश यह समझते हैं कि वह विश्व के सर्वेसर्वा हैं और सारे अधिकार उनको हासिल हैं। सारे देशों की नकेल उनके हाथ में है। इसका क्या ईलाज है ? यह बात अभी समझ में नहीं आ रही है। कुछ बोलेंगे, कुछ फरियाद करेगें कि दुनिया के साथ अत्याचार हो रहा है। उसके बाद क्या होगा ? क्या हथियारों की यह अकूत शक्ति सत्य और न्याय की आवाज को दबा देगी ? यह बात ऐसी है जिस पर विचार किया जाना चाहिए।

प्रसंगवश एक बात मैं और कहना चाहूँगा यह जो 'भूमंडलीकरण' का दौर चल रहा है इसमें हजारों लाखों दस्तकार बेरोजगार हो जाएंगें और हमारा देश इस विषय में कोई चिन्ता करने की जरूरत महसूस नहीं कर रहा है। हमारे ये बाशिन्दे जो हमारी दौलत बढ़ाने में बराबर मेहनत करते हैं, अपने खून - पसीने को एक करके देश की दौलत बढ़ाते हैं - उनका क्या हाल होगा, इसकी चिन्ता किसी को नहीं। इकबाल ने कहा था-

दस्त दौलत आफरी को मुज़द३यूँ मिलती रही।

अहले सरवत जैसे देते है गरीबो को जकात ।।

इन धन अर्जित करने वाले हाथों की हमारे सत्ताधारियों को कोई चिन्ता नहीं है । बल्कि मैं तो यह कहूँगा कि हमारे सामाजिक संगठनों को भी उनकी उतनी चिन्ता नहीं, जितनी होनी चाहिए । कयामत आ रही है लेकिन उसे रोकने की चिन्ता किसी को नहीं ।

मैं आगे कुछ नहीं कहूँगा । मैं एक बार फिर तहे-दिल से बधाई पेश करता हूँ शान्ति सैनिको को, वोरा साहब को, उनके साथियों को, और आप सब को जिन्होने अपने ऊपर आराम को हराम कर लिया और ऐसे काम के लिए उठ खड़े हुए जिसमें आपका कोई निजी स्वार्थ नहीं है, जिसमें कोई ख्याती नहीं, सत्ता का कोई सुख नहीं । आप केवल समाज सेवा के लिए उठ खड़े हुए है । मैं खुदा से दुआ करूंगा कि वह आपको कामयाब करे और आपका संगठन इस काम में दिन - दूनी और रात चौगुनी प्रगति करे ।

Swarajpeeth, G-89, Ground Floor, Preet Vihar, Vikas Marg, Delhi – 110 092
☎ +11-23235965 (R), +11-22444222 (O), swaraj@swarajpeeth.org